डॉ. भीमराव अम्बेडकर का महिला व दलितोत्थान विचारधारा की विवेचना

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग में पी.एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

निर्देशक

शोधार्थी

देवा राम मेघवाल

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर

2023

अनुक्रमणिका

1.शोध परिचय

2.शोध अध्ययन की आवश्यकता

3.शिक्षा की परिभाषाएं

4.शोध समस्या

5.तकनीकी शब्दावली

6.शोध विधि

7.शोध के चर

8.शोध के उद्धेश्य

9.परिकल्पना

10.अध्ययन में अपनाये जाने वाली विधि

11.शोध का परिसीमन

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शोध एवं परिचय

डॉ.भीमराव अम्बेडकर की महिला व दलितोत्थान विचारधारा में मुख्य स्थान मानववाद की समानता है। उन्होने जातिवाद व ब्राहम्णवाद का विरोध किया। उनके अनुसार इन वर्गो का विरोध करके ही दलित समाज का उत्थान किया जा सकता है।

उन्होने इस अन्याय के खिलाफ एक लम्बा आंदोलन शुरू किया और अंत तक अपने इस उद्धेश्य में लगे रहे।

हिन्दू समाज के मध्य जाति, धर्म , देश व वर्ण आदि के नाम पर जो भेदभाव है वो समाप्त होने चाहिए।

शोध अध्ययन की आवश्यकता

डॉ.भीमराव अम्बेडकर की महिला व दलितोत्थान विचारधारा पर अभी तक विस्तृत और गहराई से शोध नहीं हुआ है। इनकी विचारधारा पर शोध करने से मानव जाति में विद्यमान पाखण्डवाद, जातिवाद और महिलाओं के अधिकारों के हनन की बातें निकलकर सामने आयेगी और उनके निराकरण में यह शोध कारगर साबित होगा।

1. डॉ.भीमराव अम्बेडकर की महिला व दलितोत्थान विचारधारा पर अभी तक विस्तृत और गहराई से शोध नहीं हुआ है।
2. इस पर शोध करने से उनके द्वारा महिला शिक्षा के लिए किये गये प्रयासों की बातें निकलकर सामने आयेगी और उन्हे वर्तमान में सांमजस्य बैठाकर नवीन योजनायें बनानें में मदद मिलेगी।
3. इन पर शोध करने से उनकी सामाजिक सोच गये प्रयासों का पता चलेगा।

मानविकी एवं समाजशास्त्र की परिभाषा

मानविकी एवं समाजशास्त्र एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के अन्दर मौजूद जन्मजात गुणों का विकास कर व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करती है, और मानविकी एवं समाजशास्त्रीय वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने की योग्यता विकसित करती है।

मैक्स वेबर के अनुसार, ''समाजशास्त्र वह विज्ञान हैं जो सामाजिक क्रिया के व्याख्यात्मक बोध को प्रस्तुत करने का प्रयास करता हैं जिससे उसकी प्रक्रिया व प्रभावों की बुद्धिसंगत व्याख्या की जा सकें।

गिंसबर्ग के अनुसार,''समाजशास्त्र मानवीय अंतक्रियाओं और अंर्तसंबधों उनकी दशाओं और परिणामों का अध्ययन है।

तकनीकी शब्दावली

मानविकी का अर्थ –

मानविकी वह शैक्षणिक विषय हैं जिनमें प्राकृतिक व सामाजिक विज्ञानों के मुख्यतः अनुभवजन्य बदलाव के विपरीत इसमें विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक विधियों का इस्तेमाल कर मानविकि का अध्ययन किया जाता है।

मानविकी अध्ययन का उद्धेश्य–

इसके अध्ययन से मानव का मानसिक विकास होता है और वह आगे चलकर मानवीय मुद्धे पूरे जोर तरीके से उठायेगा।

ब्राहम्णवाद – ये शब्द डॉ भीमराव अम्बेडकर ने विशेषकर ब्राहम्ण व पाखण्ड फैलाने वालो के लिए प्रयोग में लिया।

Dr. B. R. Ambedkar

शोध समस्या

डॉ.भीमराव अम्बेडकर की महिला व दलितोत्थान की विचारधारा की विवेचना

शोध विधि

शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करने की प्रणाली से है। शोध अनुंसधान में कई अध्ययन विधियॉं प्रचलित है। इस शोध समस्या के लिए शोधकर्मी नें सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

सर्वेक्षण विधि–

सर्वेक्षण विधि में उन लोगों से प्रश्न पूछकर ऑंकडें इकट्ठे कियें जाते है। जिनके बारे में माना जाता है कि उनके पास जानकारी है।

शोध के उद्धेश्य

मनुष्य जब किसी समस्या को हल करने के लिए सर्वप्रथम उद्धेश्य का निर्धारण करता है। उद्धेश्यहीनता से प्रयास दिशाहीन हो जाते है तथा परिश्रम, धन व्यय हो जाता है। अतः सार्थक प्रयास व बाधित परिणामों को प्राप्त करने के लिए स्पष्ट उद्धेश्य का निर्धारण किया जाता है।

1. डॉ.भीमराव अम्बेडकर की महिला व दलितोत्थान की विचारधारा की विवेचना करना।
2. डॉ अम्बेडकर के समय प्रचलित रूढीवादी परम्पराओं को जानना।
3. महिलाओं के अधिकारों के लिए किये गयें प्रयासों को जानना।
4. दलितोत्थान के लिए कियें गये प्रयासों को जानना।

शोध के चर

शोधकर्मी अपनी समस्या से सम्बधित किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना अंकित मूल्य रखने वाले गणों की विशेषता या योग्यता का करता है।

" चर एक गुण है जिसके विभिन्न मूल्य है" करलिंगर।

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के चरों को शामिल किया गया है

1. प्राथमिक चर– प्राथमिक चर वे मूल आंकडें होते है जिसमें अनुसंधानकर्ता या उसके द्वारा नियुक्त प्रागणक, स्वय सकत्र शामिल होते है।
2. द्वितीय चर – द्वितीय आंकडे.प्रकाशित या अप्रकाशित स्त्रोत से प्राप्त होते है।

शोध की परिकल्पना

डॉ.भीमराव अम्बेडकर मुख्य रूप से एक सामाजिक क्रांतिकारी थे। वे एक तर्कशील विद्वान, बुद्धिवादी, अनिश्वरवादी व मानववादी थे। उनका मानना था कि राजनितिक सुधार से पहले सामाजिक सुधार होना चाहिए। इसी विचारधारा पर उन्होने आजीवन कार्य किया।

उन्होने महिला के अधिकारो व दलितोत्थान के लिए जीवनपर्यन्त संघर्ष किया

इस शोध के माध्यम से उनकी विचारधारा सामने आयेंगी, व समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने में मदद मिलेंगी।

अध्ययन में अपनायें जाने वाली विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि को अपनाया जायेगा। जिसके माध्यम से शोधार्थी अपने ऑकडों एवं तथ्यों को विभिन्न पुस्तकालयों की पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर अपने शोध में डॉ.भीमराव अम्बेडकर की महिला व दलितोत्थान की विचारधारा की विवेचना का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

सर्वेक्षण विधि के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित कर सकेगें।

शोध का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध में डॉ.भीमराव अम्बेडकर की महिला व दलितोत्थान की विचारधारा की विवेचना पर अध्ययन किया जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।
3. डॉ.भीमराव अम्बेडकर की महिला व दलितोत्थान की विचारधारा का विवेचनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बाबासाहेब डॉ.अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड,मय
2. Philosophy of Hiduisam
3. भगवान बुद्ध और उनका धम्म 1957
4. इण्डिया एण्ड कम्यूनिज्म
5. केन आय बी अ हिन्दू
6. Annihilation of Caste

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का महिला व दलितोत्थान विचारधारा की विवेचना

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग में पी.एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

निर्देशक

शोधार्थी

देवा राम मेघवाल

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर

2023